महिला शक्तिकरण

सफ़र भी और मंज़िल भी

विशेष संवाददाता

आज अनेक संस्थाएं शहरों, गांवों और पिछड़े आदिवासी इलाकों में औरतों के साथ काम कर रही हैं। उनके कांम के दायरे काफी अलग-अलग भी हैं। कुछ का ज़ोर औरतों की आमदनी बढ़ाने वाले कामों पर है। कुछ औरतों को शिक्षित करने में लगी हैं। कुछ अन्य संस्थाएं औरतों में जागरूकता लाने के काम से जुड़ी हैं। उन्हें संगठित कर रही हैं। इन सभी रास्तों को अपनाने के पीछे उनका मक़सद एक ही है। औरत को ताक़तवर बनने में उसकी मदद करना। आज तक की उसकी आधीनता को खत्म करना। एक स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में उसकी पहचान बनाना।

अलग-अलग रास्तों को अपनाने वालों का मानना है कि उस खास क्षेत्र में पिछड़ापन ही औरतों के निचले दर्जे का कारण है।

आमदनी बढ़ाने से जुड़े संगठन मानते हैं कि आर्थिक निर्भरता के कारण ही औरत की आवाज़ सुनी नहीं जाती। उसके विचारों को महत्व नहीं मिलता। यदि वह अपने पैरों पर खड़ी, आर्थिक रूप से ताक़तवर होगी तो समाज उसे अपने आप स्वीकारेगा। उसमें आत्मविश्वास आएगा। वह जैसे जीना चाहेगी जी सकेगी।

इसके पीछे उनका तर्क है कि आज की दुनिया मुख्य रूप से आर्थिक दुनिया है। यहां पैसे की ताक़त चलती है। इसलिए कर्ज़ की सुविधा, काम धंधे का प्रशिक्षण, बाज़ार की जानकारी जैसी मदद के द्वारा औरतों की आमदनी बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। फिर वे घर-परिवार और समाज में फ़ैसले लेने की ताक़त खुद पा जाएंगी।

शिक्षा की अहमियत

शिक्षा से जुड़े लोग मानते हैं कि आज़ादी और ताक़त का अहसास पहले दिमाग़ में जन्मता है। शिक्षा ही दिमाग के दरवाजे खोलती है। सारे संसार की जानकारी देती है। उन्हें अपने दबाव और शोषण का इतिहास बताती है। साक्षर होकर ही औरत अपने जीवन पर नियंत्रण पा सकती है। आज के संसार में जिसके पास जानकारी है उसके पास ताक़त है। आज तक औरतों को इस ताक़त से अलग रखा गया। इसलिए उन्हें शिक्षा की अहमियत बताने और शिक्षित करने के प्रयत्नों की ज़रूरत है।

हीन भावना छोड़ें

कुछ अन्य संस्थाएं ऐसी हैं जिनका मानना है कि औरत को ताक़त कहीं बाहर से नहीं पानी है। वह खुद अपने भीतर पैदा करनी है। जब तक वह खुद अपने आपको ऊंचा दर्जा देना नहीं सीखती, कोई

और उसका दर्जा नहीं बढ़ा सकता। अपने बारे में अच्छी राय रखना, अपने महत्व को समझना, परिवार और समाज में अपने योगदान को पहचानना ही इस ताक़त को पाने की सीढ़ियां हैं।

आज तक उसे हीन भावना की बेड़ियों में जकड़ कर रखा गया। उन्हें तोड़ना है। इसके साथ दूसरा कदम है आपस में एकजुट होकर सामूहिक ताक़त पैदा करना। ताकि औरतें अपने आपको अकेला और कमज़ोर न समझें। वे हमेशा दूसरों के आसरे रहने की आदत छोड़ दें। अपने हक़ों के लिए खुद लड़ना सीखें।

कोई रास्ता संपूर्ण नहीं

ये सभी रास्ते अपने आप में सही भी हैं और इनकी कुछ कमज़ोरियां भी हैं। औरतों की आर्थिक मदद करने वाले कार्यक्रम कई बार उसे ताकतवर बनाने की जगह ज्यों का त्यों रखते हैं। औरतें संस्थाओं पर मदद के लिए निर्भर होने की आदी हो जाती हैं। जब तक संस्थाएं इस ख़तरे के प्रति आगाह न रहें तब तक सशक्तता का सपना पूरा नहीं हो सकता। कई बार औरतों की आमदनी तो बढ़ जाती है पर उस आमदनी पर भी मर्द कब्जा कर लेते हैं। यानि आमदनी बढ़ने से ही औरतें अपने जीवन पर नियंत्रण हासिल नहीं कर लेतीं।

इसी तरह शिक्षा से जुड़े कई ख़तरे भी हैं। सबसे पहला सवाल तो यह है कि उनकी शिक्षा कैसी हो? आज तक हमारे स्कूलों में जो शिक्षा दी जाती है वह तो औरत को कमज़ोरी का पाठ ही पढ़ाती है। इसलिए सशक्तता पाने के लिए जो शिक्षा दी जाएगी उसे पढ़ाने का ढंग, पढ़ाई गई बातें सब आम शिक्षा से अलग होंगी।

दूसरा सवाल यह भी उठता है कि सबसे ग़रीब वर्ग की औरत की पहली ज़रूरत तो रोज़ी-रोटी है। शिक्षा से उसे तुरंत कोई फायदा मिलने वाला नहीं है। वह शिक्षा पाने के लिए क्यों और कैसे आएगी? क्या शिक्षा के साथ या उससे पहले उसके जीने के साधन मुहैया कराना ज़रूरी नहीं है?

कुछ इसी तरह के सवाल जागरूकता के रास्ते के संबंध में भी उठते हैं। क्या भूखे पेट से जागरूकता आती है? क्या भीतरी ताक़त और संगठन से बाहर के सारे हालात बदले जा सकते हैं? कुछ का यह भी कहना है कि पहले से ही काम और ज़िम्मेदारियों से दबी ग़रीब औरत पर हक़ के लिए लड़ने का बोझ, उसे और दबा देता है।

शक्तिकरण को समझें

एक बात तो समझ में आती है कि कोई भी एक रास्ता अपने आप में संपूर्ण नहीं है। वास्तव में कोई भी एक रास्ता अकेले काम कर भी नहीं सकता। मुख्य ज़ोर किसी भी गतिविधि पर क्यों न हो, बाकी सबको भी साथ लेकर चलना ज़रूरी है।

यह भी संभव नहीं कि औरत एक क्षेत्र में ताक़तवर बने और दूसरे में कमज़ोर रहे। **सशक्तता का अर्थ यही है कि उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का बराबर विकास हो।** यदि वह आर्थिक विकास करती है तो शिक्षा की ज़रूरत भी महसूस होगी। यदि उसमें चेतना पैदा होती है तो वह अपने पैरों पर भी खड़ी होना चाहेगी। उसकी सशक्तता सिर्फ़ घर के लिए या काम की जगह पर नहीं, बल्कि सब जगह बराबर होगी। उसका मान-सम्मान, दर्जा घर-बाहर हर जगह सुधरेगा। तभी वह सही मायनों में सशक्त कहलाएगी।

सशक्तता तो एक प्रक्रिया है जो हर पल चलती रहती है। □